Set - A

CBSE X	MT EDUCARE LTD.	Marks : 80
Date :	SUBJECT : **HINDI COURSE - B** **SEMI PRELIM - I** **MODEL ANSWER PAPER**	Time : 3 hrs.

	खण्ड : 'क'	
A.1.		
(क)	चातक-पुत्र की यह दशा थी कि वह प्यास से बेहाल हो रहा था । उसकी इस दशा का कारण भयंकर गर्मी पड़ना और वर्षा का न होना था ।	**2**
(ख)	चातक-पुत्र ने अपने पिता से यह कहा कि उसके प्राण चोंच तक आ गए हैं, उसे पानी की जरूरत है । उसके पिता ने उसे कुछ समय तक और धैर्य रखने के लिए कहा ।	**2**
(ग)	इस कहानी से हमें यह शिक्षा मिलती है कि हमें कष्ट उठाकर भी अपने व्रत का पालन करना चाहिए । व्रत पालन का सुफल अवश्य मिलता है ।	**2**
(घ)	चातक-पुत्र ने बादलों की प्रतीक्षा न करके कहीं से भी जलग्रहण करके अपनी प्यास बुझाने का निश्चय प्रकट किया ।	**2**
(ङ)	शीर्षक - कोटर और कुटीर ।	**1**
A.2.		
(क)	तेजस्वी लोगों की पहचान यह है कि वे अपने अधिकारों को पाने के लिए संघर्ष करते हैं । वे या तो अपने हक छीनकर ले लेते हैं या लड़ते-लड़ते मर जाते है ।	**2**
(ख)	हे धर्मराज ! अगर अपने अधिकार माँगने से न मिलें और उन्हें पाने के लिए संघर्ष किया जाए तो उसे पाप कहा जाए । ऐसी स्थिति में शोषित लोग कहाँ जाएँ ? वे जीवित कैसे रहें ? क्या वे मर जाएँ ?	**2**
(ग)	जो युद्ध न्यायपूर्ण अधिकारों को पाने के लिए किया जाता है, वह निष्पाप होता है ।	**2**
	खण्ड : 'ख'	
A.3.		
(क)	वर्णों के मेल से बना स्वतंत्र सार्थक ध्वनि समूह 'शब्द' कहलाता है। जब वही शब्द व्याकरणिय नियमों के अनुसार वाक्य में प्रयुक्त होते हैं तब वही शब्द पद बन जाता है।	**2**

(ख)	(i) जो व्यक्ति परिश्रमी होता है, वह अवश्य सफल होता है ।	1
	(ii) तुम्हारे कहने पर सब मान गए ।	1
	(iii) चूँकि वह परिश्रमी था इसलिए सफल था ।	1
A.4.		
(क)	(i) राहखर्च - तत्पुरुष समास	1
	(ii) लंबोदर - बहुव्रीहि समास	1
(ख)	(i) आजन्म - जन्म से लेकर - अव्ययीभाव समास	1
	(ii) यश-अपयश - यश और अपयश - द्वंद्व समास	1
A.5.		
(क)	(i) गीतों की एक किताब ला दीजिए ।	1
	(ii) गाजर काटकर खरगोश को खिलाओ ।	1
	(iii) आपको अभी बहुत बातें सीखनी है ।	1
	(iv) मुझ से दूध नहीं पिया जाता ।	1
(ख)	(i) श्यामलाल ! केवल **हवाई किले बनाने** से काम नहीं बनेगा, कुछ करोगे भी ।	
	मुहावरा - हवाई किले बनाना-ऊँची-ऊँची काल्पनिक योजनाएँ बनाना ।	1
	(ii) **फूटी आँख न सुहाना -** जरा भी अच्छा न लगना ।	
	वाक्य : मुझे तुम्हारा यह रिश्तेदार क्लर्क **फूटी आँख भी नहीं सुहाता** ।	1
	खण्ड : 'ग'	
A.6.		
(क)	पुलिस कमिश्नर की नोटिस के अनुसार कोई सभा नहीं हो सकती थी । सभा में भाग लेने वाले अमुक - अमुक धारा के तहत दोषी समझे जाएँगे । कौंसिल की नोटिस के अनुसार मोनुमेंट के ठीक नीचे चार बजकर चौबीस मिनट पर झंडा फहराया जाएगा तथा सभी की उपस्थिति अनिवार्य है । इसमें सर्वसाधारण की उपस्थिति माँगी गई थी। यह एक खुला चैलेंज था । पुलिस कमिश्नर के नोटिस और कौंसिल के नोटिस के बीच यही अंतर था ।	2
(ख)	सुभाष बाबू को स्वतंत्रता दिवस मनाने और आंदोलन का नेतृत्व करने के आरोप में पकड़ लिया गया । २६ जनवरी १९३१ को कोलकाता में मोनुमेंट के नीचे सभा करके राष्ट्रीय झंडा फहराना था तथा पूर्ण स्वतंत्रता की घोषणा करनी थी । सुभाष बाबू उसी सिलसिले में आंदोलन करते हुए वहाँ पहुँचे थे ।	2
(ग)	लेखक कक्षा में प्रथम आया था । परंतु उसकी यह खुशी इसलिए आधी रह गई क्योंकि उसका बड़ा भाई चौथी बार फेल हो गया था ।	1

A.7.	प्रेम का बंधन सर्वोत्तम बंधन है । रूढ़ियाँ व परंपराएँ समाज के एक अनिवार्य अंग हैं । रूढ़ियाँ जब बंधन बनकर बोझ बनने लगे तो उनका टूट जाना ही अच्छा है क्योंकि रूढ़ी एक ऐसी प्रवृत्ति है जो समाज को पतन की ओर ले जाती है । यह रुढ़ी जब बंधन बन जाती है तो जीवन दिशाहीन एवं नीरस हो जाता है । बंधन चाहे वह पति - पत्नी का हो या रिश्तों का जब उसमें प्रेम है तभी वह सुखद प्रतीत होता है । बंधन अगर बोझ बन जाए तो उसे ढोना बड़ा दुखद बन जाता है ।	**5**
	अथवा	
	बड़े भाईसाहब स्वभाव से बड़े अध्ययनशील थे । वे हरदम किताब खोले बैठे रहते थे । दिमाग को आराम देने के लिए चिड़ियों, कुत्तों, बिल्लियों की तस्वीरें बनाया करते थे । वे स्वभाव से बड़े मेहनती थे । इसके बावजूद उन्हें असफलता का मुँह देखना पड़ता था । वे अपने छोटे भाई पर हमेशा कड़ी नजर रखते थे । उनके अनुसार पढ़ने लिखने से व्यक्ति तजुरबेकार नहीं हो जाता है । तजुरबा उम्र के साथ - साथ बढ़ता है । उन्होंने कुछ उदाहरण देकर इस बात को अपने छोटे भाई को समझाने की कोशिश की । शिक्षा - व्यवस्था के प्रति उनका अलग नजरिया है। अपने छोटे भाई के समक्ष आदर्श प्रस्तुत करने के लिए उन्होंने अपनी इच्छाओं का त्याग कर दिया । इस तरह बड़े भाई साहब मेहनती, अध्ययनशील तथा सलाहकार के रूप में इस पाठ में दर्शाये गये हैं ।	**5**
A.8.		
(क)	कवि ने दधीचि, कर्ण आदि व्यक्तियों का उदाहरण देकर मनुष्य को यह संदेश दिया कि उसी व्यक्ति का जीवन सफल है जो अपने अंतिम सासों तक दूसरे के लिए जिए । महर्षि दधीचि ने मानवकल्याण के लिए ही अपनी अस्थियों का दान कर दिया । महावीर कुंती पुत्र कर्ण ने अपने कवच - कुण्डल का दान कर दिया । जिस प्रकार वृक्ष अपना फल स्वयं नहीं खाते और नदी अपने लिए जल संचित नहीं करती । उसी प्रकार मनुष्य का जीवन परोपकार के लिए होना चाहिए ।	**2**
(ख)	श्रीकृष्ण के माथे पर मोर-पंख का मुकुट बड़ा ही मनोहारी लगता है । पीला वस्त्र धारण किये हुए, हाथ में मुरली लिए और गले में बैजंती के फूलों की माला के कारण उनका रूप - सौंदर्य मन को लुभाता है । वृंदावन में पशुओं को चराते हुए मोहन मुरलीवाले कामदेव की सुंदरता को मात दे देते हैं ।	**2**
(ग)	गोपियाँ श्रीकृष्ण से बातें करना चाहती हैं । उनकी बातों का आनंद लेना चाहती हैं । इस लालच में आकर वे उनकी मुरली छुपा देती हैं । तभी समर्थ भाव है कि तारता हुआ तरे ।	**1**
A.9.	संसार में सुखी वह है जो भगवान के प्रति जाग्रत न होकर तन -मन सें सांसारिक सुखों को भोगता हो, ठाठ से सोता हो । दुखी वह है जो भगवान के प्रेम में पड़ गया हो । दिन-रात ईश्वर से मिलने के लिए जागता हो और तड़पता हो। 'सोना' का आशय है - प्रभु के प्रति उदासीन होना अर्थात अज्ञान में पड़े रहना । जागना का आशय है - प्रभु के प्रति लगनशील और आस्थावान होना अर्थात ज्ञान प्राप्ति की दिशा में आगे बढ़ना ।	

	कवि ने भगवान के प्रति उदासीन संसारी लोगों के सुखों को व्यर्थ बताने के लिए उन्हें सोया हुआ बताया है तथा प्रभु वियोग में व्याकुल लोगों को जागा हुआ बताया है ।	5
	अथवा	
	वर्षाऋतु में प्रकृति का वेश पल-पल बदलता रहता है । पर्वत मेखलाकार अर्थात् गोलाकार रुप लिए रहते हैं । उस पर हजारों फूल खिले रहते हैं । ये फूल मानो इसके नेत्र हैं । यह इन नेत्रों की सहायता से अपने पैरों तले तालाब के जल में अपने विशाल आकार को देखकर मुग्ध हो रहा है । वह बार-बार अपने रूप और आकार को देखता है, इससे उसकी मुग्धता का पता चलता है ।	5
A.10.	हरिहर काका अनपढ़ थे । उन्हें इस बात का अच्छी तरह ज्ञान था की सभी की नजर उनकी जमीन पर है । महंत और अपने भाईयों के स्वार्थी व्यवहार को देखते हुए, उन्होंने यह सोच लिया था कि वे एक बार मरना पसंद करेंगें लेकिन रमेसर की विधवा की तरह गलती नहीं करेंगे । रमेसर की विधवा को बहला-फुसलाकर उसके भाईयों ने सारी जमीन अपने नाम लिखवा ली और उसे घुट-घुटकर मरने के लिए छोड़ दिया । उन्होनें इसी कारण अपने भाईयों से कह दिया था कि वे जीते-जी जमीन किसी के नाम नहीं करेंगे । मरने के बाद जमीन उनके भाईयों के नाम हो जाएगी । इस प्रकार हरिहर काका दुनिया की बेहतर समझ रखते थे ।	5
	अथवा	
	घर के बड़े-बूढ़े एक बरगद के पेड़ के समान होते हैं जिनकी छत्र-छाया में हम छोटे-छोटे पौधों के रूप में अपने आपको सुरक्षित समझते हैं । मनुष्य स्वभाव से स्वार्थी होता है । ''वृक्ष कबहुँ नहिं फल भखै, नदी न संचै नीर परमारथ के कारने, साधुन धरा शरीर ।'' जिस तरह से वृक्ष अपने फल कभी नहीं खाता, नदी अपने लिए पानी का संग्रह नहीं करती है, उसी प्रकार एक सजग नागरिक के रूप में हमें नि:स्वार्थ भाव से बड़े-बूढ़ों की सेवा करनी चाहिए । हर माता-पिता की यह इच्छा होती है कि वह अपने बच्चों को सुखी जीवन दे लेकिन भाग्य हर किसी का साथ नहीं देता । कुछ लोग अपने बच्चों के लिए काफ़ी धन छोड़ जाते हैं तो कुछ लोग चाहकर भी कुछ नहीं कर पाते । जीवन में धन ही सब कुछ नहीं होता । यह संसार प्रेम से चलता है । हमारा यह धर्म एवं कर्तव्य है कि घर के बड़े-बूढ़ों की सेवा करनी चाहिए और यथाशक्ति उन्हें खुशियाँ देनी चाहिए । जिस तरह से घर के बड़े बूढ़ों ने अपना पेट काटकर हमारा पालन-पोषण किया उसी प्रकार हमें भी उनके प्रति समर्पित रहना चाहिए । भारतीय संस्कृति में माता-पिता को देव का दर्जा दिया गया है । उनके आशीर्वाद से बढ़कर इस दुनिया में कुछ नहीं है । उनकी उपस्थिति मात्र से हमारा मनोबल ऊँचा रहता है और उनके अनुभव से हम बहुत कुछ सीखते हैं । हमें उनके प्रति इस तरह समर्पित रहना चाहिए कि उनके मुँह से निकल पड़े ''तुम्हारे जैसा पुत्र पाकर मेरा जीवन धन्य हो गया ।'' आप जैसा करोगे, वैसा भरोगे । अत: उनके पास जमीन जायदाद हो हमारे लिए यह ज़रूरी नहीं, हमारे दो हाथ काफ़ी है । जिनका सही उपयोग कर हम अपनी आवश्यकतानुकूल साधनों का अर्जन कर सकते हैं ।	5

खण्ड : 'घ'

A.11.

(क) **पराधीनता**

स्वतंत्रता या स्वाधीनता मनुष्य का जन्मसिद्ध अधिकार है । मनुष्य ही क्यों, सृष्टि के प्रत्येक प्राणी को स्वाधीन रहने का अधिकार है । स्वतंत्रता के अभाव में मानव अपना सर्वांगीण विकास नहीं कर सकता । पराधीनता में तो उसके लिए स्वर्ग - नरक में अंतर करना कठिन है । उसके लिए स्वर्ग और नरक में कोई अंतर नहीं । वियोगी हरि के शब्दो में -

''पराधीन जे नर नहीं, स्वर्ग - नरक ता हेतू ।
पराधीन जे नर, नहीं स्वर्ग - नरक ता हेतू ।''

पराधीन व्यक्ति का अपना किसी प्रकार का स्वतंत्र अस्तित्व नहीं होता । उसमें अनेक प्रकार की क्षमताएँ हो सकती हैं किंतु परतंत्र होने के कारण उसे अवसर ही नहीं मिल पाता । वह सदा दूसरों की अनुकंपा पर ही अपना जीवन निर्वाह करता है । उसका व्यक्तित्व कुंठित हो जाता है । पराधीनता में मनुष्य को परसंचालित मशीन की तरह कार्य करना पड़ता है । **5**

(ख) **व्यायाम का लाभ**

प्रत्येक मानव सुख व आनंद की प्राप्ति चाहता है और दुख से बचाव । मानसिक सुख को प्राप्त करने का मुख्य साधन है दैहिक स्वस्थता । इसका सर्वोत्तम उपाय है - व्यायाम । हमारे पूर्वज कहा करते थे कि 'तंदुरुस्ती लाख नियामतों से भी अच्छी है ।' अतः पहला सुख नीरोग काया ही माना गया है । देह को नीरोग रखने के लिए व्यायाम आवश्यक है ।

आलस्य मानव जीवन को शिथिल बना देता है । आलसी की बुद्धि का संबंध अंतरंग नसों व अवयवों से होता है । व्यायाम के बिना पाचन क्रिया ठीक से नहीं हो पाती है । व्यायाम नियमित व सीमित करना चाहिए । व्यायाम के साथ - साथ ब्रह्मचर्य पालन भी होना चाहिए । नियमित व्यायाम के लिए संयम की आवश्यकता होती है । **5**

(ग) **शिक्षा का उद्देश्य**

शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य ज्ञान प्रदान करना है । ज्ञान ही मानव को शक्ति और आनंद प्रदान करता है । चरित्र निर्माण भी ज्ञान द्वारा ही संभव है । शिक्षा का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य ज्ञान माना गया है, किंतु यह उस समय दोषपूर्ण हो जाता है जब इसे शिक्षा का एकमात्र उद्देश्य समझ लिया जाता है । इसका सांस्कृतिक उद्देश्य है, जाति की संस्कृति को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचाने में सहायता प्रदान करना, जिससे वर्तमान पीढ़ी सुसंस्कृत बन जाये, सभ्य हो जाये । शिक्षा का एक सामाजिक उद्देश्य भी है कि ऐसे नागरिक तैयार होने चाहिए जो समाज - कल्याण व राष्ट्र - कल्याण के लिए अपना सर्वस्व बलिदान करने को तैयार रहे ।

इस प्रकार हम देखते हैं कि शिक्षा के अनेक उद्देश्य हैं । किसी एक उद्देश्य को शिक्षा का एकमात्र उद्देश्य मान बैठना उचित नहीं है । अंत में हम कह सकते हैं कि शिक्षा का उद्देश्य एक संतुलित एवं सम्यक व्यक्तित्व का विकास करना है । **5**

A.12.

(क) सेवा में,
निगमायुक्त
दिल्ली नगर निगम,
दिल्ली ।

विषय – <u>सार्वजनिक नल लगवाने के लिए पत्र ।</u>

महोदय,

निवेदन है कि जे.जे.कॉलोनी में बहुत कम घरों में नल लगे हुए हैं । यही कारण है कि लोगों को पानी भरने के लिए सार्वजनिक नल की शरण लेनी पड़ती हैं ।

हमारी बस्ती में सार्वजनिक नल बहुत कम है । सार्वजनिक नल पर पानी लेने के लिए लंबी लाइनें दिखाई देती हैं । प्राय: पानी के कारण सार्वजनिक नलों पर परस्पर गाली - गलौच हाथा - पाई, मार - पीट और सिर फुटौवल देखने को मिलता है ।

हमारा आपसे अनुरोध है कि बस्ती में और अधिक सार्वजनिक नल लगवाने की व्यवस्था की जाए, जिससे बस्तीवालों को पानी के अभाव के कारण कष्ट न सहना सहना पड़े ।

आशा है, आप इस ओर तुरंत ध्यान देंगे ।

धन्यवाद ।

निवेदक,
क ख ग
पता -
दिनांक - **5**

अथवा

सेवा में,
संपादक
नवभारत टाइम्स,
नई दिल्ली ।

विषय – <u>टेलीफोन की खराबी के संबंध में शिकायती पत्र ।</u>

महोदय,

मैं आपके लोकप्रिय समाचार - पत्र के माध्यम से महानगर टेलीफोन निगम के उच्च अधिकारियों का ध्यान अपनी शिकायत की ओर दिलाना चाहता हूँ । मेरा टेलीफोन नं. ५५७६३२२८८ गत दो सप्ताह से खराब है । इसकी शिकायत कई बार की गई है । क्षेत्रीय कार्यालय में कई बार चक्कर लगाने के बावजूद यह टेलीफोन अभी तक ठीक नहीं हो पाया है । नियमित रूप से सेवा - प्रभार लेने के बावजूद उपभोक्ता को सेवा न देना सरासर अन्याय है । आशा है यह पत्र पढ़कर निगम की कार्यप्रणाली में कुछ सुधार आ जाए ।

धन्यवाद ।

भवदीय,
रामेश्वर शुक्ल,
७/२२, जीवन पार्क
नई दिल्ली ।
दिनांक **5**

A.13.

सरस्वती उच्च विद्यालय, गाँधी नगर,
लखनऊ
बाल कल्याण परिषद

सूचना

हमारे विद्यालय की बाल कल्याण परिषद पास की झुग्गी झोंपड़ी के गरीब बच्चों की सहायता के लिए अतिरिक्त कक्षाएँ लगाने जा रही है । ये कक्षाएँ एक मास तक हर रोज शाम 5 से 7 तक लगेंगी । इनमें पढ़ाई के दौरान बच्चों को आने वाली समस्याओं का समाधान करने का प्रयत्न किया जाएगा । इस पुण्य कार्य के लिए जो भी छात्र-छात्राएँ आगे आना चाहते हैं, वे आपने नाम 30 नवंबर तक बाल कल्याण परिषद के कार्यालय में जमा करवा दें।

दिनांक : 10.10.2017

आशीष जाधव
सचिव, बाल कल्याण परिषद **5**

अथवा

नवोदय विद्यालय,
जौनपुर
समाज सेवा परिषद

सूचना

हमारे विद्यालय की समाज सेवा परिषद नगर के अनाथ बच्चों के आवास 'बाल ग्राम' में जाकर उनकी स्थिति और आवश्यकता को समझने के लिए एक कार्यक्रम बनाने जा रही है । जो सेवाभावी विद्यार्थी इसमें रुचि रखते हैं वे अपने नाम समाज सेवा परिषद के कार्यालय में 30 अक्टूबर तक दे दें ।

दिनांक : अक्टूबर 15, 2017

राकेश गुप्ता
अध्यक्ष, समाज सेवा समिति **5**

A.14.

अखिलेश – हलो राजेंद्र! बधाई हो!
राजेंद्र – धन्यवाद!
अखिलेश – पूरे बोर्ड में प्रथम आकर तूने कमाल कर दिया या! बहुत बधाई!
राजेंद्र – धन्यवाद अखिलेश! मुझे सचमुच खुद विश्वास नहीं हो रहा ।

अखिलेश – परंतु मुझे खुशी है कि मेरा विश्वास आज सच हो गया! मैं कहा करता था न कि एक-न-एक दिन तू कोई कारनामा ज़रूर करेगा ।

राजेंद्र – बस यह तेरे जैसे दोस्तों और भला चाहने वालों की दुआएँ हैं । वरना मैं किस योग्य हूँ!

अखिलेश – यही! यही तो बात मुझे तेरा दीवाना बना देती है । तुझमें जो विनम्रता है, मैं इसका कायल हूँ ।

राजेंद्र – भाई अखिलेश! मैं जानता हूँ! मेरे से योग्य कितने ही लड़के-लड़कियाँ और हैं । मेरा भाग्य है कि मैं प्रथम आ गया । कई लड़के-लड़कियाँ दो-दो नंबरों से मेरे पीछे हैं ।

अखिलेश – भगवान करे! तू यशस्वी बने । माता-पिता को मेरी ओर से बधाई देना!

राजेंद्र – ज़रूर-ज़रूर ।

अखिलेश – अरे यह तो बता! मिठाई कब खिलाएगा ?

राजेंद्र – जब तेरे पास वक्त हो । अभी चल!

अखिलेश – चल! खाने के लिए तो मैं तैयार ही रहता हूँ । **5**

अथवा

गणेश – हलो सूरज! कैसे हो!

सूरज – ठीक हूँ भाई! आज का मैच देखा! आज युवराज ने कमाल का शतक जमा दिया ।

गणेश – और परसों, जो रैना ने 78 रन बनाए थे! उसने तो हारता हुआ मैच लपक लिया ।

सूरज – भाई मानना पड़ेगा, अब भारतीय टीम में ऐसे-ऐसे प्रतिभाशाली खिलाड़ी आ गए हैं कि पता नहीं चलता, कौन कब अपना जलवा दिखा दे ।

गणेश – पिछले कई मैचों से महेंद्र सिंह धोनी छाया हुआ है । उसने तो पाकिस्तान के बालरों को सचमुच धोकर रख दिया था ।

सूरज – गणेश। पहले तो हम सचिन, द्रविड़, सहवाग की ओर निहारतें रहते थे । अब यह स्थिति आ चुकी है कि ये तीनों भी नए खिलाड़ियों के सामने फीके पड़ने लगे हैं ।

गणेश – मैं इसके लिए टीम के कोच ग्रेग चैपल को बधाई देना चाहूँगा जिसने सौरव गांगुली जैसे महान खिलाड़ी को बाहर करके एक जोखिम लिया था। परंतु वह जोखिम ठीक साबित हुआ ।

सूरज – और क्या! कोई खिलाड़ी पुराना होने के कारण टीम में नहीं लिया जाना चाहिए! हमेशा उसके वर्तमान खेल को देखा जाना चाहिए ।

गणेश – अब लगता है, सचिन के बाहर जाने की बारी है ।

सूरज – यार! अब उसका शरीर साथ नहीं दे रहा । जब से उसका ऑपरेशन हुआ है, उसका आत्मविश्वास डगमगा गया है ।

गणेश – तभी तो कह रहा हूँ, अब उसके बाहर होने की बारी है!

सूरज – मैं प्रभु से प्रार्थना करता हूँ कि वह उसे शक्ति दे!

गणेश – और मैं चाहता हूँ कि भारत में नए-से-नए क्रिकेट-सितारे उभरें । **5**

A.15.

स्वर्णिम भविष्य की दस्तक !

सरस्वती विद्यालय

जी.टी. रोड, अंबाला

केवल कक्षा 9 तथा 10 के विद्यार्थियों के लिए

- व्यक्तित्व विकास की सभी आधुनिक सुविधाएँ!
- आधुनिक प्रयोगशालाएँ!
- इंडोर तथा आउटडोर खेलों का प्रबंध!
- संगीत, नृत्य, संभाषण हर छात्र के लिए आवश्यक!
- राष्ट्रीय प्रतिभाओं के साथ संपर्क को प्रोत्याहन!

अवसर मत चूकिए!

केवल 100-100 सीटें!

प्रवेश साक्षात्कार और 'पहले आओ, पहले पाओ' के आधार पर!

निदेशक

मोहन पवार

संपर्क : 989234567 **5**

अथवा

नयन बिल्डर्स

एल.बी.एस. रोड, मुलुंड

मुंबई

प्रस्तुत करता है

मकानहीन नौकरीशुदा लोगों के लिए

अपना मकान

- दो बेडरूम, हॉल, रसोई वाला सेट (5000 रु. प्रतिमास 20 वर्षों तक)
- तीन बेडरूम, हॉल, रसोई वाला सेट (6000 रु. प्रतिमास 22 वर्षों तक)
- चार बेडरूम, हॉल, रसोई वाला सेट (8000 रु. प्रतिमास 20 वर्षों तक)

25% राशि बुकिंग के समय जमा करानी होगी ।

सुनहरा अवसर ! **जल्दी कीजिए !**

संपर्क : प्रकाश बिल्डर्स, रोहित गुप्ता 0987654321, संजय दलाल - 0123456781 **5**

❖❖❖❖